पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0
(राज्यपाल सूचना परिसर)

राज्यपाल की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में आज राजभवन के गांधी सभागार में गुजरात राज्य का स्थापना दिवस मनाया गया

गुजरात की समृद्ध लोक संस्कृति, कला, साहित्य, खानपान, परंपराओं एवं विशेषताओं पर आधारित वृत्तचित्र, रंगोली एवं प्रदर्शनी का किया गया आयोजन

गुजरात की विकास यात्रा और सामाजिक सौहार्द पूरे देश के लिए प्रेरणास्रोत

गुजरात को एक आधुनिक, विकसित और समृद्ध राज्य के रूप में देखा जाता है, इसका श्रेय सरकार द्वारा सुनियोजित नीति-निर्माण एवं सशक्त क्रियान्वयन को जाता है

समाज का समग्र विकास तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समय पर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हों

यदि सही दिशा में कार्य किया जाए तो समाज के वंचित वर्ग भी प्रगति की मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं

बड़ी जिम्मेदारियों को सफलता पूर्वक निभाने के लिए टीमवर्क, समन्वय और समयबद्धता आवश्यक हैं

जब जनसहभागिता, नेतृत्व और प्रबंधन एक साथ मिलते हैं, तो कोई भी प्रयास असाधारण उपलब्धियों में बदल जाता है

-राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल

लखनऊ : 06 मई, 2025

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में आज राजभवन के गांधी सभागार में गुजरात राज्य का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर गुजरात की समृद्ध लोक संस्कृति, कला, साहित्य, खानपान, परंपराओं एवं विशेषताओं पर आधारित वृत्तचित्र, रंगोली एवं प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया, जिसने वहां की सांस्कृतिक विविधता को सजीव रूप में दर्शाया।

कार्यक्रम के दौरान गुजरात से पधारे कलाकारों द्वारा डांडिया नृत्य, गरबा नृत्य, ताली रास नृत्य, मिश्र रास नृत्य तथा राठवा आदिवासी लोक नृत्य जैसी रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्होंने कार्यक्रम में पारंपरिक रंग

भर दिए और दर्शकों को गुजरात की सांस्कृतिक आत्मा से रूबरू कराया। इन प्रस्तुतियों को दर्शकों ने भरपूर सराहा।

राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने इस अवसर पर सभी को गुजरात राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गुजरात की संस्कृति, विकास यात्रा और सामाजिक सौहार्द पूरे देश के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने कहा कि गुजराती भोजन सर्वदा संतुलित एवं पौष्टिक आहार के रूप में जाना जाता है, जिसमें सभी आवश्यक पोषक तत्व समाहित होते हैं। राज्यपाल जी ने गुजरात से आए कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि उनकी प्रस्तुतियां ऊर्जा, उत्साह और जीवंतता से परिपूर्ण थीं, जिन्होंने कार्यक्रम को एक विशेष ऊंचाई प्रदान की।

उन्होंने बताया कि गुजरात राज्य की स्थापना एक लंबे और व्यापक आंदोलन का परिणाम थी। यह कोई सहज प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना के व्यापक प्रसार और जनआंदोलन के माध्यम से संभव हो सकी। आज गुजरात को एक आधुनिक, विकसित और समृद्ध राज्य के रूप में देखा जाता है, इसका श्रेय सरकार द्वारा सुनियोजित नीति–निर्माण एवं सशक्त क्रियान्वयन को जाता है।

उन्होंने कहा कि शिक्षा, स्वास्थ्य और व्यवसाय, इन तीनों क्षेत्रों में गुजरात सरकार ने दूरदर्शिता के साथ योजनाएं बनाईं और दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्हें क्रियान्वित किया। राज्य में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संस्थानों, सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं और व्यापक व्यावसायिक अवसरों का निर्माण हुआ। सड़क, बिजली, जल और डिजिटल कनेक्टिविटी जैसी आधारभूत संरचनाओं को मजबूत किया गया, जिससे प्रदेश के हर कोने तक विकास पहुँचा।

राज्यपाल जी ने विशेष रूप से यह उल्लेख किया कि गुजरात में "ईज़ ऑफ डूइंग बिजनेस" को प्राथमिकता के साथ लागू किया गया। व्यावसायिक प्रक्रियाओं को सरल और पारदर्शी बनाया गया, जिससे निवेशकों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार हुआ। उद्योग–धंधों से जुड़ी समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु प्रभावशाली नीतिगत ढांचे विकसित किए गए, जिससे विदेशी निवेशकों का विश्वास भी राज्य पर मजबूत हुआ।

उन्होंने यह भी कहा कि वर्ष 2003 में "वाइब्रेंट गुजरात" शिखर सम्मेलन का आयोजन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन में किया गया, जिसने गुजरात को वैश्विक आर्थिक मानचित्र पर एक नई पहचान दिलाई। इस आयोजन में न केवल देश–विदेश की प्रमुख कंपनियों ने भाग लिया, बल्कि बड़े स्तर पर एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए, जिससे गुजरात में रोजगार के अवसरों का विस्तार हुआ और राज्य की छवि एक वैश्विक निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित हुई।

राज्यपाल जी ने गुजरात में अपने कार्यकाल के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब वे वहां मंत्री पद पर कार्यरत थीं, तब उन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। समाज का समग्र विकास

तभी संभव है जब प्रत्येक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समय पर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हों। इसी उद्देश्य से उन्होंने गुजरात में 'मां वात्सल्य योजना' की शुरुआत की, ताकि आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को भी बेहतर इलाज की सुविधा मिल सके। इस योजना के माध्यम से हजारों लोगों को निःशुल्क चिकित्सा सेवाएं मिलीं और इसका अत्यंत सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। केंद्र सरकार द्वारा शुरू की गई आयुष्मान भारत योजना ने इस प्रयास को और अधिक व्यापकता दी, जिससे बड़ी संख्या में नागरिकों को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हुआ। सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक समय से और प्रभावी ढंग से पहुंचे, इसके लिए समर्पण, कठोर परिश्रम और सतत प्रयास की आवश्यकता होती है। जब ये योजनाएं सही तरीके से क्रियान्वित होती हैं, तभी जनता का विश्वास सरकार और प्रशासन में सुदृढ़ होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि गुजरात के किसानों ने परिश्रम और ईमानदारी से कार्य करने की परंपरा स्थापित की है। वहां मेहनत को जीवन का अभिन्न हिस्सा बना लिया गया है, जिससे कृषि और पशुपालन क्षेत्र में निरंतर प्रगति हुई है। उन्होंने बताया कि जब वे गुजरात में राजस्व मंत्री थीं, तब राज्य को वित्तीय हब के रूप में विकसित करने की दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। उन्होंने डायमंड सिटी के संदर्भ में कहा कि पहले संबंधित कार्यालय मुंबई में स्थित था, जिससे गुजरात के व्यापारियों को अनेक व्यवहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। बाद में इस कार्यालय को सूरत में स्थानांतरित करने का कार्य किया गया, जिससे व्यापार में सुविधा बढ़ी और राज्य के आर्थिक विकास को बल मिला। परिणामस्वरूप आज गुजरात को सर्वश्रेष्ठ सिटी के रूप में देखा जाता है

राज्यपाल जी ने कहा कि जब वह गुजरात में शिक्षा मंत्री थीं, तब उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। इन क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए निजी कंपनियों और निजी विद्यालयों के सहयोग से शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई। इस प्रयास का परिणाम यह हुआ कि आदिवासी समुदाय के अनेक बच्चे आज मेडिकल और इंजीनियरिंग जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर डॉक्टर और इंजीनियर बन रहे हैं। कई छात्र विदेशों में भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यदि सही दिशा में कार्य किया जाए तो समाज के वंचित वर्ग भी प्रगति की मुख्यधारा से जुड़ सकते हैं।

राज्यपाल जी ने यह भी कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने व्यापक स्तर पर कार्य किया। राज्य की भौगोलिक, सामाजिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नए विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई और शिक्षा का क्षेत्रीय विस्तार सुनिश्चित किया गया। उन्होंने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न रखकर जीवनोपयोगी और रोजगारोन्मुख बनाने की दिशा में अनेक पहल कीं, जिससे युवाओं को समुचित अवसर प्राप्त हो सके।

उन्होंने अधिकारियों को संबोधित करते हुए कार्यप्रणाली में प्रबंधन (मैनेजमेंट) के सिद्धांतों को अपनाने पर विशेष जोर दिया और कहा कि बड़ी जिम्मेदारियों को सफलता पूर्वक निभाने के लिए टीमवर्क, समन्वय और समयबद्धता आवश्यक हैं। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों से अपेक्षा की कि वे आपसी सहयोग और समर्पण की भावना के साथ कार्य करते हुए सौंपे गए दायित्वों को मिलकर कुशलतापूर्वक संपन्न करें।

अमूल डेयरी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए बताया कि इसका प्रारंभ 1946 में गुजरात के किसानों के एक छोटे से आंदोलन से हुआ था। इस आंदोलन को सरदार वल्लभभाई पटेल और त्रिभुवनदास पटेल के नेतृत्व और मार्गदर्शन से बल मिला। बाद में डॉ. वर्गीज कुरियन के कुशल प्रबंधन और दूरदृष्टि ने अमूल को न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की एक प्रतिष्ठित ब्रांड बना दिया।

राज्यपाल जी ने कहा कि अमूल की यह यात्रा इस बात का उदाहरण है कि जब जनसहभागिता, नेतृत्व और प्रबंधन एक साथ मिलते हैं, तो कोई भी प्रयास असाधारण उपलब्धियों में बदल जाता है। उन्होंने अधिकारियों से अपेक्षा की कि वे भी इसी प्रकार योजना, समर्पण और सामूहिक भावना से कार्य करते हुए अपने लक्ष्यों को साकार करें।

भारत की एकता और राष्ट्रीय गर्व के प्रतीक 'स्टैचू ऑफ यूनिटी' का विशेष उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह भव्य प्रतिमा न केवल सरदार वल्लभभाई पटेल के अप्रतिम योगदान की स्मृति है, बल्कि यह देशवासियों में राष्ट्रप्रेम, एकता और प्रेरणा का भी सशक्त स्रोत है।

इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव, श्री राज्यपाल डॉ0 सुधीर महादेव बोबडे, विशेष सचिव श्री राज्यपाल, श्री श्रीप्रकाश गुप्ता, वि ोश कार्याधिकारी श्री अ ोक देसाई, डॉ0 सती ा कुमार आईपीएस, श्रीमती रीनू रंगभारती, सहायक निदे ाक संस्कृति विभाग, अतिथिगण, कलाकार, वि वविद्यालयों के विद्यार्थी, राजभवन के अधिकारी, कर्मचारी सहित अन्य उपस्थित थे।

————————

संपर्क सूत्रः
डॉ0 संगीता चौधरी,
सूचना अधिकारी, राजभवन
मो0: 9161668080

राजभवन